

Chapter तेईस

ययाति के पुत्रों की वंशावली

इस तेईसवें अध्याय में अनु, द्रुह्यु, तुर्वसु तथा यदु के वंशों के साथ साथ ज्यामघ की कथा का भी वर्णन हुआ है।

ययाति के चतुर्थ पुत्र अनु के तीन पुत्र थे—सभानर, चक्षु तथा परेषु। इन तीनों में से सभानर के पुत्र तथा पौत्र क्रमशः कालनर, सृञ्जय, जनमेजय, महाशाल तथा महामना थे। महामना के दो पुत्र थे उशीनर तथा तितिक्षु। उशीनर के चार पुत्र थे—शिबि, वर, कृमि तथादक्ष। शिबि के भी चार पुत्र हुए—वृषादर्भ, सुधीर, मद्र तथा केकय। तितिक्षु का पुत्र रुषद्रथ था जिससे होम नामक पुत्र हुआ। होम का पुत्र सुतपा था और सुतपा का पुत्र बलि था। इस तरह यह वंश चलता रहा। बलि की पत्नी के गर्भ से दीर्घतमा के वीर्य से अंग, वंग, कलिंग, सुह्य, पुण्ड्र तथा ओड्र नामक पुत्र उत्पन्न हुए। ये सभी राजा बने।

अंग से खलपान नाम का पुत्र हुआ जिसके वंश में क्रमशः दिविरथ, धर्मरथ तथा चित्ररथ जिसे रोमपाद भी कहा जाता था, हुए। महाराज दशरथ ने शान्ता नामक अपनी पुत्री को अपने मित्र रोमपाद को दान में दे दिया था क्योंकि रोमपाद निःसन्तान था। रोमपाद ने शान्ता को पुत्री रूप में स्वीकार किया और ऋष्यशृंग मुनि ने उसके साथ विवाह किया। ऋष्यशृंग के अनुग्रह से रोमपाद के चतुरंग नाम का पुत्र हुआ। चतुरंग का पुत्र पृथुलाक्ष था जिसके तीन पुत्र हुए—बृहद्रथ, बृहत्कर्मा तथा बृहद्भानु। बृहद्रथ से बृहद्भानु नामक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसके पुत्रों तथा पौत्रों के नाम क्रमशः जयद्रथ, विजय, धृति, धृतव्रत, सत्कर्मा तथा अधिरथ थे। अधिरथ ने कुन्ती द्वारा त्यक्त पुत्र कर्ण को पाला-पोसा। कर्ण का पुत्र वृषसेन था।

ययाति के तीसरे पुत्र द्रुह्यु से बभ्रु नामक पुत्र हुआ और बभ्रु के पुत्र तथा पौत्र थे सेतु, आरब्ध, गान्धार, धर्म, धृत, दुर्मद तथा प्रचेता।

ययाति का दूसरा पुत्र तुर्वसु था जिसके पुत्र का नाम वह्नि पड़ा और उसके वंश में भर्ग, भानुमान, त्रिभानु, करन्धम तथा मरुत हुए। मरुत निःसन्तान था अतएव उसने पूरुवंशी दुष्मन्त को गोद ले लिया। महाराज दुष्मन्त अपना राज्य वापस चाहते थे अतएव वे पूरुवंश में लौट गये।

यदु के चारों पुत्रों में से सहस्रजित सबसे बड़ा था। उसके पुत्र का नाम शतजित था। उसके तीन पुत्र थे

जिनमें एक का नाम हैहय था। हैहय वंश के पुत्रों तथा पौत्रों के नाम थे धर्म, नेत्र, कुन्ति, सोहज्जि, महिष्मान, भद्रसेनक, धनक, कृतवीर्य, अर्जुन, जयध्वज, तालजंघ तथा वीतिहोत्र।

वीतिहोत्र का पुत्र मधु था जिसका ज्येष्ठ पुत्र वृष्णि था। यदु, मधु तथा वृष्णि के कारण उनके वंश क्रमशः यादव, माधव तथा वृष्णि कहलाये। यदु का अन्य पुत्र क्रोष्टा था जिससे वृजिनवान, स्वाहित, विषदग्, चित्ररथ, शशविन्दु, पृथुश्रवा, धर्म, उशना तथा रुचक हुए। रुचक के पाँच पुत्र हुए जिनमें से एक ज्यामघ कहलाया। वह निःसन्तान था, किन्तु देव-अनुग्रह से उसकी सन्तानहीन पत्नी के विदर्भ नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।

श्रीशुक उवाच

अनोः सभानरश्चक्षुः परेषुश्च त्रयः सुताः ।

सभानरात्कालनरः सृञ्जयस्तत्सुतस्ततः ॥ १ ॥

शब्दार्थ

श्री-शुकः उवाच—श्रीशुकदेव गोस्वामी ने कहा; अनोः—अनु का, जो ययाति के चार पुत्रों में से चौथा बेटा था; सभानरः—सभानर; चक्षुः—चक्षु; परेषुः—परेष्णु; च—भी; त्रयः—तीन; सुताः—बेटे; सभानरात्—सभानर से; कालनरः—कालनर; सृञ्जयः—सृञ्जय; तत्-सुतः—कालनर का पुत्र; ततः—तत्पश्चात्।

शुकदेव गोस्वामी ने कहा : ययाति के चतुर्थ पुत्र अनु के तीन पुत्र हुए जिनके नाम थे—सभानर, चक्षु तथा परेषु। हे राजा, सभानर के कालनर नाम का एक पुत्र हुआ और कालनर से सृञ्जय नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।

जनमेजयस्तस्य पुत्रो महाशालो महामनाः ।

अशीनरस्तितिक्षुश्च महामनस आत्मजौ ॥ २ ॥

शब्दार्थ

जनमेजयः—जनमेजय; तस्य—उसका; पुत्रः—पुत्र; महाशालः—महाशाल; महामनाः—महामना; अशीनरः—अशीनर; तितिक्षुः—तितिक्षु; च—तथा; महामनसः—महामना से; आत्मजौ—दो पुत्र।

सृञ्जय का पुत्र जनमेजय हुआ, जनमेजय का पुत्र महाशाल, महाशाल का पुत्र महामना और महामना के दो पुत्र अशीनर तथा तितिक्षु हुए।

शिविर्वरः कृमिर्दक्षश्चत्वारोशीनरात्मजाः ।

वृषादर्भः सुधीरश्च मद्रः केकय आत्मवान् ॥ ३ ॥

शिबेश्चत्वार एवासंस्तितिक्षोश्च रुषद्रथः ।
ततो होमोऽथ सुतपा बलिः सुतपसोऽभवत् ॥ ४ ॥

शब्दार्थ

शिबिः—शिबि; वरः—वर; कृमिः—कृमि; दक्षः—दक्ष; चत्वारः—चार; उशीनर-आत्मजाः—उशीनर के पुत्र; वृषादर्भः—वृषादर्भ;
सुधीरः च—तथा सुधीर; मद्रः—मद्र; केकयः—केकय; आत्मवान्—स्वरूपसिद्ध; शिबेः—शिबि के; चत्वारः—चार; एव—
निस्सन्देह; आसन्—थे; तितिक्षोः—तितिक्षु का; च—भी; रुषद्रथः—रुषद्रथ; ततः—उससे (रुषद्रथ); होमः—होम; अथ—उससे
(होम); सुतपाः—सुतपा; बलिः—बलि; सुतपसः—सुतपा के; अभवत्—हुआ।

उशीनर के चार पुत्र थे—शिबि, वर, कृमि तथा दक्ष। शिबि के भी चार पुत्र हुए—वृषादर्भ,
सुधीर, मद्र तथा आत्मतत्त्ववित् केकय। तितिक्षु का पुत्र रुषद्रथ था; रुषद्रथ का पुत्र होम था; होम
का सुतपा और सुतपा का पुत्र बलि था।

अङ्गवङ्गकलिङ्गाद्याः सुह्यपुण्ड्रौडसंज्ञिताः ।
जज्ञिरे दीर्घतमसो बलेः क्षेत्रे महीक्षितः ॥ ५ ॥

शब्दार्थ

अङ्ग—अंग; वङ्ग—वंग; कलिङ्ग—कलिंग; आद्याः—इत्यादि; सुह्य—सुह्य; पुण्ड्र—पुण्ड्र; ओड्र—ओड्र; संज्ञिताः—नाम से विख्यात;
जज्ञिरे—उत्पन्न हुए; दीर्घतमसः—दीर्घतमा के वीर्य से; बलेः—बलि की; क्षेत्रे—पत्नी से; मही-क्षितः—जगत के राजा।

चक्रवर्ती राजा बलि की पत्नी से दीर्घतमा के वीर्य से छह पुत्रों ने जन्म लिया जिनके नाम थे
अंग, वंग, कलिंग, सुह्य, पुण्ड्र तथा ओड्र।

चक्रुः स्वनाम्ना विषयान्घडिमान्प्राच्यकांश्च ते ।
खलपानोऽङ्गतो जज्ञे तस्माद्विविरथस्ततः ॥ ६ ॥

शब्दार्थ

चक्रुः—उत्पन्न किया; स्व-नाम्ना—अपने-अपने नामों से; विषयान्—विभिन्न राज्य; षट्—छ; इमान्—ये सभी; प्राच्यकान् च—
भारत की पूर्व दिशा में; ते—वे (छह राजा); खलपानः—खलपान; अङ्गतः—राजा अंग से; जज्ञे—जन्म लिया; तस्मात्—उससे;
दिविरथः—दिविरथ; ततः—तत्पश्चात्।

बाद में अंगादि ये छहों पुत्र भारत की पूर्व दिशा में छः राज्यों के राजा बने। ये राज्य अपने-अपने
राजा के नाम के अनुसार विख्यात हुए। अंग से खलपान नामक पुत्र हुआ जिससे दिविरथ उत्पन्न
हुआ।

सुतो धर्मरथो यस्य जज्ञे चित्ररथोऽप्रजाः ।
रोमपाद इति ख्यातस्तस्मै दशरथः सखा ॥ ७ ॥
शान्तां स्वकन्यां प्रायच्छदृष्यशृङ्ग उवाह याम् ।

देवेऽवर्षति यं रामा आनिन्युर्हरिणीसुतम् ॥ ८ ॥

नाट्यसङ्गीतवादित्रैर्विभ्रमालिङ्गनार्हणैः ।

स तु राज्ञोऽनपत्यस्य निरूप्येष्टिं मरुत्वते ॥ ९ ॥

प्रजामदाद्दशरथो येन लेभेऽप्रजाः प्रजाः ।

चतुरङ्गो रोमपादात्पृथुलाक्षस्तु तत्सुतः ॥ १० ॥

शब्दार्थ

सुतः—पुत्र; धर्मरथः—धर्मरथ; यस्य—जिसके; जज्ञे—उत्पन्न हुआ; चित्ररथः—चित्ररथ; अप्रजाः—निःसन्तान; रोमपादः—रोमपाद; इति—इस प्रकार; ग्ख्यातः—विख्यात; तस्मै—उसको; दशरथः—दशरथ; सखा—मित्र; शान्ताम्—शान्ता को; स्व-कन्याम्—अपनी पुत्री; प्रायच्छत्—दे दिया; ऋष्यशृंगः—ऋष्यशृंग ने; उवाह—विवाह कर लिया; याम्—जिससे; देवे—वर्षा के देवता ने; अवर्षति—वर्षा नहीं की; यम्—जिसको (ऋष्यशृंग को); रामाः—वेश्याएँ; आनिन्युः—ले आईं; हरिणी-सुतम्—हरिणी पुत्र ऋष्यशृंग को; नाट्य-सङ्गीत-वादित्रैः—नाच, गाना तथा वाद्ययंत्रों के द्वारा; विभ्रम—मोहित करके; आलिङ्गन—आलिङ्गन करके; अर्हणैः—पूजा द्वारा; सः—वह (ऋष्यशृंग); तु—निस्सन्देह; राज्ञः—महाराज दशरथ से; अनपत्यस्य—सन्तानहीन; निरूप्य—स्थापित करके; इष्टिम्—यज्ञ; मरुत्वते—मरुत्वान नामक देवता की; प्रजाम्—सन्तान; अदात्—प्रदान किया; दशरथः—दशरथ ने; येन—जिससे (यज्ञ के फलस्वरूप); लेभे—प्राप्त किया; अप्रजाः—निस्सन्तान होते हुए; प्रजाः—पुत्र; चतुरङ्गः—चतुरंग; रोमपादात्—चित्ररथ से; पृथुलाक्षः—पृथुलाक्ष; तु—निस्सन्देह; तत्-सुतः—चतुरंग का पुत्र।

दिविरथ का पुत्र धर्मरथ हुआ और उसका पुत्र चित्ररथ था जो रोमपाद के नाम से विख्यात था।

किन्तु रोमपाद के कोई सन्तान न थी अतएव उसके मित्र महाराज दशरथ ने उसे अपनी पुत्री शान्ता दे दी। रोमपाद ने उसे पुत्री रूप में स्वीकार किया। तत्पश्चात् उस पुत्री ने ऋष्यशृंग से विवाह कर लिया। जब स्वर्गलोक के देवताओं ने वर्षा नहीं की तो ऋष्यशृंग को वेश्याओं के द्वारा आकर्षित करके जंगल से लाया गया और उसे एक यज्ञ सम्पन्न करने के लिए पुरोहित नियुक्त किया गया। ये वेश्याएँ नाचकर तथा संगीत के साथ नाटक करके और उनका आलिङ्गन तथा पूजन करके उन्हें ले आई थीं। ऋष्यशृंग के आने के बाद वर्षा हुई। तत्पश्चात् ऋष्यशृंग ने महाराज दशरथ के लिए पुत्र-यज्ञ किया क्योंकि उनका कोई पुत्र न था। इससे महाराज दशरथ को पुत्र-प्राप्ति हुई। ऋष्यशृंग की कृपा से रोमपाद के एक पुत्र चतुरंग हुआ और चतुरंग से पृथुलाक्ष का जन्म हुआ।

बृहद्रथो बृहत्कर्मा बृहद्भानुश्च तत्सुताः ।

आद्याद्बृहन्मनास्तस्माज्जयद्रथ उदाहृतः ॥ ११ ॥

शब्दार्थ

बृहद्रथः—बृहद्रथ; बृहत्कर्मा—बृहत्कर्मा; बृहद्भानुः—बृहद्भानु; च—भी; तत्-सुताः—पृथुलाक्ष के पुत्र; आद्यात्—सबसे बड़े (बृहद्रथ) से; बृहन्मनाः—बृहद्भानु उत्पन्न हुआ; तस्मात्—उससे; जयद्रथः—जयद्रथ; उदाहृतः—उसके पुत्र के रूप में विख्यात हुआ।

पृथुलाक्ष के पुत्र थे बृहद्रथ, बृहत्कर्मा तथा बृहद्भानु। ज्येष्ठ पुत्र बृहद्रथ से बृहद्भानु नाम का पुत्र

हुआ और बृहद्भानु से जयद्रथ हुआ।

विजयस्तस्य सम्भूत्यां ततो धृतिरजायत ।
ततो धृतव्रतस्तस्य सत्कर्माधिरथस्ततः ॥ १२ ॥

शब्दार्थ

विजयः—विजय; तस्य—उसका; सम्भूत्याम्—पत्नी के गर्भ से; ततः—तत्पश्चात्; धृतिः—धृति; अजायत—उत्पन्न हुआ; ततः—उससे (धृति से); धृतव्रतः—धृतव्रत; तस्य—उसका; सत्कर्मा—सत्कर्मा; अधिरथः—अधिरथ; ततः—उससे (सत्कर्मा से)।

जयद्रथ की पत्नी सम्भूति के गर्भ से विजय उत्पन्न हुआ, विजय से धृति, धृति से धृतिव्रत, धृतिव्रत से सत्कर्मा तथा सत्कर्मा से अधिरथ हुआ।

योऽसौ गङ्गातटे क्रीडन्मञ्जूषान्तर्गतं शिशुम् ।
कुन्त्यापविद्धं कानीनमनपत्योऽकरोत्सुतम् ॥ १३ ॥

शब्दार्थ

यः असौ—वह जो (अधिरथ); गङ्गा-तटे—गंगा नदी के किनारे; क्रीडन्—खेलते समय; मञ्जूष-अन्तःगतम्—टोकरी के भीतर बन्द; शिशुम्—बालक को; कुन्त्या अपविद्धम्—कुन्ती द्वारा परित्यक्त; कानीनम्—कुमारी होने पर उत्पन्न; अनपत्यः—अधिरथ के निःसन्तान होने से; अकरोत्—शिशु को स्वीकार कर लिया; सुतम्—अपने पुत्र रूप में।

गंगा नदी के तट पर खेलते समय अधिरथ को एक टोकरी में बंद एक शिशु प्राप्त हुआ। इस शिशु को कुन्ती ने छोड़ दिया था क्योंकि यह उसके विवाह होने के पूर्व ही उत्पन्न हुआ था। चूँकि अधिरथ के कोई पुत्र न था अतएव उसने इस शिशु को अपने ही पुत्र की तरह पाला पोसा। (बाद में यही पुत्र कर्ण कहलाया)

वृषसेनः सुतस्तस्य कर्णस्य जगतीपते ।
द्रुह्योश्च तनयो बभूः सेतुस्तस्यात्मजस्ततः ॥ १४ ॥

शब्दार्थ

वृषसेनः—वृषसेन; सुतः—पुत्र; तस्य कर्णस्य—उसी कर्ण का; जगती पते—हे महाराज परीक्षित; द्रुह्योः च—ययाति के तृतीय पुत्र द्रुह्य का; तनयः—पुत्र; बभूः—बभू; सेतुः—सेतु; तस्य—उसका; आत्मजः ततः—तत्पश्चात् उसका पुत्र।

हे राजा, कर्ण का एकमात्र पुत्र वृषसेन था। ययाति के तृतीय पुत्र द्रुह्य का पुत्र बभू था और बभू का पुत्र सेतु था।

आरब्धस्तस्य गान्धारस्तस्य धर्मस्ततो धृतः ।
धृतस्य दुर्मदस्तस्मात्प्रचेताः प्राचेतसः शतम् ॥ १५ ॥

शब्दार्थ

आरब्धः—आरब्ध (सेतु का पुत्र); तस्य—उसका (आरब्ध का); गान्धारः—गान्धार; तस्य—उसका पुत्र; धर्मः—धर्म; ततः—उससे; धृतः—धृत; धृतस्य—धृत का; दुर्मदः—दुर्मद; तस्मात्—उससे; प्रचेताः—प्रचेता; प्राचेतसः—प्रचेता के; शतम्—एक सौ पुत्र थे।

सेतु का पुत्र आरब्ध था, आरब्ध का पुत्र गान्धार हुआ और गान्धार का पुत्र धर्म था। धर्म का पुत्र

धृत, धृत का दुर्मद और दुर्मद का पुत्र प्रचेता था जिसके एक सौ पुत्र हुए।

म्लेच्छाधिपतयोऽभूवन्नृदीचीं दिशमाश्रिताः ।

तुर्वसोश्च सुतो वह्निर्वह्नेर्भर्गोऽथ भानुमान् ॥ १६ ॥

शब्दार्थ

म्लेच्छ—म्लेच्छ देश के (जहाँ वैदिक सभ्यता नहीं पाई जाती); अधिपतयः—राजा; अभूवन्—बने; उदीचीम्—भारत की उत्तरी; दिशम्—दिशा को; आश्रिताः—सीमा मानकर; तुर्वसोः च—महाराज ययाति के द्वितीय पुत्र तुर्वसु का; सुतः—पुत्र; वह्निः—वह्नि; वह्नेः—वह्नि का; भर्गः—भर्ग नाम का पुत्र; अथ—तत्पश्चात् उसका पुत्र; भानुमान्—भानुमान।

प्रचेताओं (प्रचेता के पुत्रों) ने भारत की उत्तरी दिशा में कब्जा कर लिया जो वैदिक सभ्यता से विहीन थी और वे वहाँ के राजा बन गये। ययाति का दूसरा पुत्र तुर्वसु था। तुर्वसु का पुत्र वह्नि था, वह्नि का पुत्र भर्ग था और भर्ग का पुत्र भानुमान था।

त्रिभानुस्तत्सुतोऽस्यापि करन्धम उदारधीः ।

मरुतस्तत्सुतोऽपुत्रः पुत्रं पौरवमन्वभूत् ॥ १७ ॥

शब्दार्थ

त्रिभानुः—त्रिभानु; तत्-सुतः—भानुमान का पुत्र; अस्य—उसका (त्रिभानु का); अपि—भी; करन्धमः—करन्धम; उदार-धीः—अत्यन्त उदार बुद्धिवाला; मरुतः—मरुत; तत्-सुतः—करन्धम का पुत्र; अपुत्रः—निःसन्तान; पुत्रम्—पुत्र के रूप में; पौरवम्—पूरुवंश का पुत्र महाराज दुष्मन्त; अन्वभूत्—गोद ले लिया।

भानुमान का पुत्र त्रिभानु था और उसका पुत्र उदारचेता करन्धम था। करन्धम का पुत्र मरुत था जिसके कोई पुत्र न था अतएव उसने पूरुवंशी पुत्र (महाराज दुष्मन्त) को पुत्र रूप में गोद ले लिया।

दुष्मन्तः स पुनर्भेजे स्ववंशं राज्यकामुकः ।

ययातेर्ज्येष्ठपुत्रस्य यदोर्वशं नरर्षभ ॥ १८ ॥

वर्णयामि महापुण्यं सर्वपापहरं नृणाम् ।

यदोर्वशं नरः श्रुत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १९ ॥

शब्दार्थ

दुष्मन्तः—महाराज दुष्मन्त ने; सः—उस; पुनः भेजे—फिर से स्वीकार किया; स्व-वंशम्—अपने मूलवंश (पूरुवंश) को; राज्य-कामुकः—राजसिंहासन का इच्छुक होने के कारण; ययातेः—महाराज ययाति के; ज्येष्ठ-पुत्रस्य—पहले पुत्रयदु का; यदोः वंशम्—यदुवंश; नर-ऋषभ—हे मनुष्यों में श्रेष्ठ महाराज परीक्षित; वर्णयामि—वर्णन करूँगा; महा-पुण्यम्—अत्यन्त पवित्र; सर्व-पाप-हरम्—

सारे पापकर्मों के फलों को दूर करने वाला; नृणाम्—मनुष्यों का; यदोः वंशम्—यदुवंश का वर्णन; नरः—कोई व्यक्ति; श्रुत्वा—केवल सुनने से; सर्व-पापैः—सारे पापपूर्ण कर्मों के फलों से; प्रमुच्यते—मुक्त हो जाता है।

महाराज दुष्मन्त सिंहासन में बैठने की इच्छा से अपने मूलवंश (पूरुवंश) में लौट गये यद्यपि वे मरुत को अपना पिता स्वीकार कर चुके थे। हे महाराज परीक्षित, अब मैं महाराज ययाति के ज्येष्ठ पुत्र यदु के वंश का वर्णन करता हूँ। यह वर्णन अत्यन्त पवित्र है और मानवसमाज के सारे पापों के फलों को दूर करने वाला है। इस वर्णन को सुनने मात्र से मनुष्य सारे पापों के फलों से मुक्त हो जाता है।

यत्रावतीर्णो भगवान्परमात्मा नराकृतिः ।

यदोः सहस्रजित्क्रोष्टा नलो रिपुरिति श्रुताः ॥ २० ॥

चत्वारः सूनवस्तत्र शतजित्प्रथमात्मजः ।

महाहयो रेणुहयो हैहयश्चेति तत्सुताः ॥ २१ ॥

शब्दार्थ

यत्र—जिस वंश में; अवतीर्णः—अवतार लिया; भगवान्—भगवान् कृष्ण; परमात्मा—सारे जीवों के परमात्मा; नर-आकृतिः—मनुष्य के रूप में; यदोः—यदु का; सहस्रजित्—सहस्रजित; क्रोष्टा—क्रोष्टा; नलः—नल; रिपुः—रिपु; इति श्रुताः—इस प्रकार से विख्यात; चत्वारः—चारों; सूनवः—पुत्र; तत्र—वहाँ; शतजित्—शतजित; प्रथम-आत्मजः—पहला पुत्र; महाहयः—महाहय; रेणुहयः—रेणुहय; हैहयः—हैहय; च—तथा; इति—इस प्रकार; तत्-सुताः—उसके पुत्र।

भगवान् कृष्ण, जो सारे जीवों के हृदयों में परमात्मा स्वरूप हैं, मनुष्य के अपने आदि रूप में यदु कुल में अवतरित हुए। यदु के चार पुत्र थे—सहस्रजित्, क्रोष्टा, नल तथा रिपु। इन चारों में से सबसे बड़े सहस्रजित के एक पुत्र था जिसका नाम शतजित था। उसके तीन पुत्र हुए—महाहय, रेणुहय तथा हैहय।

तात्पर्य : जैसा कि श्रीमद्भागवत (१.२.११) में पुष्टि हुई है—

वदन्ति तत्तत्त्वविदस्तत्त्वं यज्ज्ञानमद्वयम् ।

ब्रह्मेति परमात्मेति भगवानिति शब्दते ॥

“विद्वान् आध्यात्मवादी जो परम सत्य को जानते हैं, इस अद्वय ज्ञान को ब्रह्म, परमात्मा या भगवान् कहते हैं।” अधिकांश आध्यात्मवादी केवल निराकार ब्रह्म या अन्तर्यामी परमात्मा को समझते हैं क्योंकि भगवान् को समझ पाना अत्यन्त कठिन है। भगवान् ने भगवद्गीता (७.३) में कहा है—

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये ।

यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥

“हजारों व्यक्तियों में से कोई एक व्यक्ति सिद्धि के लिए प्रयास करता है और जिन्होंने सिद्धि पा ली है उनमें से मुश्किल से एक मुझे जानता है।” योगी तथा ज्ञानी अर्थात् मायावादी और निर्विशेषवादी परम सत्य को निराकार या अन्तर्यामी रूप में समझ सकते हैं और ऐसे स्वरूपसिद्ध व्यक्ति यद्यपि सामान्य पुरुषों से बढ़कर होते हैं फिर भी वे यह नहीं समझ सकते कि परमेश्वर किस तरह एक व्यक्ति हो सकता है। इसीलिए कहा गया है कि अनेक सिद्धों में से जिन्होंने परम सत्य का साक्षात्कार किया है कोई एक सिद्ध नर-रूप (*नराकृति*) कृष्ण को समझ सकता है। स्वयं कृष्ण ने इस मनुष्य रूप की व्याख्या विराट रूप प्रदर्शित करने के बाद की है। विराट रूप भगवान् का आदि रूप नहीं है। उनका आदि रूप तो द्विभुज श्यामसुन्दर मुरलीधर का है जो दो हाथों वाले हैं और मुरली बजा रहे हैं (*यं श्यामसुन्दरम् अचिन्त्यगुणस्वरूपम्*)। भगवान् के स्वरूप उनके अकल्पनीय गुणों के प्रमाण हैं। यद्यपि भगवान् अपने एक श्वास काल में असंख्य ब्रह्माण्डों का पालन करते हैं, किन्तु वे मनुष्य की भाँति वेश धारण किये रहते हैं। किन्तु इसका अर्थ यह भी नहीं है कि वे हू-बहू मनुष्य हैं। यह उनका आदि रूप है लेकिन चूँकि वे मनुष्य की तरह दिखते हैं अतएव अल्पज्ञानी उन्हें सामान्य मनुष्य मानते हैं। भगवान् कहते हैं (*भगवद्गीता ९.११*)

अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम् ।

परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् ॥

“जब मैं मनुष्य रूप में अवतरित होता हूँ तो मूर्ख मेरा उपहास करते हैं। वे मेरी दिव्य प्रकृति एवं मेरे परम ईश्वरत्व को नहीं जानते।” भगवान् अपने परं भावम् अर्थात् दिव्य स्वभाव से सारे जीवों के हृदयों में स्थित सर्वव्यापी परमात्मा हैं; फिर भी वे मनुष्य की तरह लगते हैं। मायावादी दर्शन कहता है कि भगवान् मूलतः निराकार हैं, किन्तु जब वे अवतरित होते हैं तो मनुष्य तथा अनेक अन्य रूप धारण करते हैं। किन्तु वस्तुतः वे मूलतः मनुष्य जैसे हैं और निराकार ब्रह्म उनके शरीर की किरणों से युक्त होता है (*यस्य प्रभा प्रभवतो जगदण्डकोटि*)।

धर्मस्तु हैहयसुतो नेत्रः कुन्तेः पिता ततः ।

सोहञ्जिरभवत्कुन्तेर्महिष्मान्भद्रसेनकः ॥ २२ ॥

शब्दार्थ

धर्मः तु—किन्तु धर्म; हैहय-सुतः—हैहय का पुत्र बना; नेत्रः—नेत्र; कुन्तेः—कुन्ति का; पिता—पिता; ततः—उससे; सोहञ्जिः—सोहञ्जि; अभवत्—हुआ; कुन्तेः—कुन्ति पुत्र; महिष्मान्—महिष्मान; भद्रसेनकः—भद्रसेनक ।

हैहय का पुत्र धर्म था और धर्म का पुत्र नेत्र था जो कुन्ति का पिता था। कुन्ति से सोहञ्जि, सोहञ्जि से महिष्मान तथा महिष्मान से भद्रसेनक उत्पन्न हुए।

दुर्मदो भद्रसेनस्य धनकः कृतवीर्यसूः ।

कृताग्निः कृतवर्मा च कृतौजा धनकात्मजाः ॥ २३ ॥

शब्दार्थ

दुर्मदः—दुर्मद; भद्रसेनस्य—भद्रसेन का; धनकः—धनक; कृतवीर्य-सूः—कृतवीर्य को जन्म देने वाला; कृताग्निः—कृताग्नि नामक; कृतवर्मा—कृतवर्मा; च—भी; कृतौजाः—कृतौजा; धनक-आत्मजाः—धनक के पुत्र ।

भद्रसेन के पुत्र दुर्मद तथा धनक कहलाये। धनक कृतवीर्य के अतिरिक्त कृताग्नि, कृतवर्मा तथा कृतौजा का भी पिता था।

अर्जुनः कृतवीर्यस्य सप्तद्वीपेश्वरोऽभवत् ।

दत्तात्रेयाद्धरेरंशात्प्राप्तयोगमहागुणः ॥ २४ ॥

शब्दार्थ

अर्जुनः—अर्जुन; कृतवीर्यस्य—कृतवीर्य का; सप्त-द्वीप—सातों द्वीपों (पूरे संसार) का; ईश्वरः अभवत्—सम्राट बन गया; दत्तात्रेयात्—दत्तात्रेय से; हरेः अंशात्—भगवान् के अंशावतार से; प्राप्त—प्राप्त; योग-महागुणः—योगशक्ति का गुण ।

कृतवीर्य का पुत्र अर्जुन था। वह (कार्तवीर्यार्जुन) सातों द्वीप वाले सारे संसार का सम्राट बन गया। उसे भगवान् के अवतार दत्तात्रेय से योगशक्ति प्राप्त हुई थी। इस तरह उसने अष्ट सिद्धियाँ प्राप्त कर लीं।

न नूनं कार्तवीर्यस्य गतिं यास्यन्ति पार्थिवाः ।

यज्ञदानतपोयोगैः श्रुतवीर्यदयादिभिः ॥ २५ ॥

शब्दार्थ

न—नहीं; नूनम्—निस्सन्देह; कार्तवीर्यस्य—कार्तवीर्य के; गतिम्—कार्यकलाप; यास्यन्ति—समझ या प्राप्त कर सकते थे; पार्थिवाः—पृथ्वी के रहने वाले; यज्ञ—यज्ञ; दान—दान; तपः—तपस्या; योगैः—योगशक्ति से; श्रुत—शिक्षा; वीर्य—बल; दया—दया; आदिभिः—इन गुणों से।

इस संसार का कोई भी राजा यज्ञ, दान, तपस्या, योगशक्ति, शिक्षा, बल या दया में कार्तवीर्यार्जुन की बराबरी नहीं कर सकता था।

पञ्चाशीति सहस्राणि ह्यव्याहतबलः समाः ।
अनष्टवित्तस्मरणो बुभुजेऽक्षय्यषड्वसु ॥ २६ ॥

शब्दार्थ

पञ्चाशीति—पचासी; सहस्राणि—हजार; हि—निस्सन्देह; अव्याहत—न चुकने वाला; बलः—जिसका बल; समाः—वर्ष; अनष्ट—नष्ट हुए बिना; वित्त—भौतिक ऐश्वर्य; स्मरणः—तथा स्मरण शक्ति; बुभुजे—भोग किया; अक्षय्य—अक्षय; षट्-वसु—छः प्रकार का भोग्य भौतिक ऐश्वर्य।

कार्तवीर्यार्जुन ने लगातार पचासी हजार वर्षों तक पूर्ण शारीरिक बल तथा त्रुटिरहित स्मरण शक्ति से भौतिक ऐश्वर्यों का भोग किया। दूसरे शब्दों में, उसने अपनी छहों इन्द्रियों से अक्षय भौतिक ऐश्वर्यों का भोग किया।

तस्य पुत्रसहस्रेषु पञ्चैवोर्वरिता मृधे ।
जयध्वजः शूरसेनो वृषभो मधुरुर्जितः ॥ २७ ॥

शब्दार्थ

तस्य—उसके (कार्तवीर्यार्जुन के); पुत्र-सहस्रेषु—एक हजार पुत्रों में; पञ्च—पाँच; एव—केवल; उर्वरिताः—जीवित रहे; मृधे—(परशुराम के साथ हुए) युद्ध में; जयध्वजः—जयध्वज; शूरसेनः—शूरसेन; वृषभः—वृषभ; मधुः—मधु; ऊर्जितः—तथा ऊर्जित।

कार्तवीर्यार्जुन के एक हजार पुत्रों में से परशुराम से युद्ध करने के बाद केवल पाँच पुत्र जीवित बचे। उनके नाम थे जयध्वज, शूरसेन, वृषभ, मधु तथा ऊर्जित।

जयध्वजात्तालजङ्घस्तस्य पुत्रशतं त्वभूत् ।
क्षत्रं यत्तालजङ्घाख्यमौर्वतेजोपसंहृतम् ॥ २८ ॥

शब्दार्थ

जयध्वजात्—जयध्वज से; तालजङ्घः—तालजंघ नाम का पुत्र; तस्य—उसके; पुत्र-शतम्—एक सौ पुत्र; तु—निस्सन्देह; अभूत्—उत्पन्न हुए; क्षत्रम्—क्षत्रिय वंश; यत्—जो; तालजङ्घ-आख्यम्—तालजंघ नाम से विख्यात; और्व-तेजः—अत्यन्त शक्तिशाली होने से; उपसंहृतम्—महाराज सगर द्वारा मार डाले गये।

जयध्वज के तालजंघ नाम का एक पुत्र था जिसके एक सौ पुत्र उत्पन्न हुए। उस तालजंघ नामक वंश के सारे क्षत्रियों का विनाश महाराज सगर द्वारा किया गया जिन्हें और्व ऋषि से महान् शक्ति प्राप्त हुई थी।

तेषां ज्येष्ठो वीतिहोत्रो वृष्णिः पुत्रो मधोः स्मृतः ।
तस्य पुत्रशतं त्वासीद्वृष्णिज्येष्ठं यतः कुलम् ॥ २९ ॥

शब्दार्थ

तेषाम्—उन सबों में; ज्येष्ठः—सबसे बड़ा पुत्र; वीतिहोत्रः—वीतिहोत्र; वृष्णिः—वृष्णि; पुत्रः—पुत्र; मधोः—मधु का; स्मृतः—विख्यात था; तस्य—वृष्णि के; पुत्र-शतम्—एक सौ पुत्र; तु—लेकिन; आसीत्—हुए; वृष्णि—वृष्णि; ज्येष्ठम्—ज्येष्ठ; यतः—जिससे; कुलम्—वंश।

तालजंघ के पुत्रों में से वीतिहोत्र सबसे बड़ा था। वीतिहोत्र का पुत्र मधु था जिसका पुत्र वृष्णि विख्यात था। मधु के एक सौ पुत्र हुए जिनमें वृष्णि सबसे बड़ा था। यादव, माधव तथा वृष्णि नामक वंशों का उद्गम यदु, मधु तथा वृष्णि से हुआ।

माधवा वृष्णयो राजन्यादवाश्चेति संज्ञिताः ।
यदुपुत्रस्य च क्रोष्टोः पुत्रो वृजिनवांस्ततः ।
स्वाहितोऽतो विषद्गुर्वै तस्य चित्ररथस्ततः ॥ ३० ॥
शशबिन्दुर्महायोगी महाभागो महानभूत् ।
चतुर्दशमहारत्नश्चक्रवर्त्यपराजितः ॥ ३१ ॥

शब्दार्थ

माधवाः—मधु से चलने वाला वंश; वृष्णयः—वृष्णि से चलने वाला वंश; राजन्—हे राजा (महाराज परीक्षित); यादवाः—यदुवंशी; च—और; इति—इस प्रकार; संज्ञिताः—इन विभिन्न पुरुषों के कारण ऐसा कहलाते हैं; यदु-पुत्रस्य—यदु के पुत्र का; च—भी; क्रोष्टोः—क्रोष्टा का; पुत्रः—पुत्र; वृजिनवान्—जिसका नाम वृजिनवान था; ततः—उससे; स्वाहितः—स्वाहित; अतः—तत्पश्चात्; विषद्गुः—विषद्गु; वै—निस्सन्देह; तस्य—उसका; चित्ररथः—चित्ररथ; ततः—उससे; शशबिन्दुः—शशबिन्दु; महा-योगी—महान् योगी; महा-भागः—अत्यधिक भाग्यशाली; महान्—महापुरुष; अभूत्—हुआ; चतुर्दश-महारत्नः—चौदह प्रकार के महान् ऐश्वर्य; चक्रवर्ती—सम्राट के रूप में; अपराजितः—न हराया जा सकने वाला।

हे महाराज परीक्षित, चूँकि यदु, मधु तथा वृष्णि में से हर एक ने वंश चलाये अतएव उनके वंश यादव, माधव तथा वृष्णि कहलाते हैं। यदु के पुत्र क्रोष्टा के वृजिनवान नाम का एक पुत्र हुआ। वृजिनवान का पुत्र स्वाहित था, स्वाहित का विषद्गु, विषद्गु का चित्ररथ और चित्ररथ का पुत्र शशबिन्दु हुआ जो महान् योगी था और चौदहों ऐश्वर्यों से युक्त था तथा वह चौदह महान् रत्नों का स्वामी था। इस तरह वह संसार का सम्राट बना।

तात्पर्य : मार्कण्डेय पुराण में चौदह प्रकार के महारत्नों का वर्णन इस प्रकार हुआ है (१) हाथी (२) घोड़ा (३) रथ (४) पत्नी (५) बाण (६) सम्पत्तिकोश (७) माला (८) बहुमूल्य वस्त्र (९) वृक्ष (१०) भाला (११) पाश (१२) मणि (१३) छाता (१४) विधान। सम्राट होने के लिए इन चौदहों ऐश्वर्यों का होना आवश्यक है। शशबिन्दु के पास ये सभी थे।

तस्य पत्नीसहस्राणां दशानां सुमहायशाः ।
दशलक्षसहस्राणि पुत्राणां तास्वजीजनत् ॥ ३२ ॥

शब्दार्थ

तस्य—शशबिन्दु की; पत्नी—पत्नियाँ; सहस्राणाम्—हजारों में से; दशानाम्—दस; सु-महा-यशाः—अत्यन्त विख्यात; दश—दस; लक्ष—लाख; सहस्राणि—हजार; पुत्राणाम्—पुत्रों का; तासु—उनमें; अजीजनत्—उसने उत्पन्न किया ।

सुप्रसिद्ध शशबिन्दु के दस हजार पत्नियाँ थीं और उनमें से हर एक से एक लाख पुत्र उत्पन्न हुए ।

इसलिए उसके पुत्रों की संख्या एक अरब थी ।

तेषां तु षट्प्रधानानां पृथुश्रवस आत्मजः ।
धर्मो नामोशना तस्य हयमेधशतस्य याद् ॥ ३३ ॥

शब्दार्थ

तेषाम्—उन पुत्रों में से; तु—लेकिन; षट् प्रधानानाम्—जिसमें छह प्रमुख थे; पृथुश्रवसः—पृथुश्रवा का; आत्मजः—पुत्र; धर्मः—धर्म; नाम—नामक; उशना—उशना; तस्य—उसका; हयमेध-शतस्य—एक सौ अश्वमेघ यज्ञों का; याद्—सम्पन्न करने वाला ।

इन अनेक पुत्रों में से छह अग्रणी थे यथा पृथुश्रवा तथा पृथुकीर्ति । पृथुश्रवा का पुत्र धर्म

कहलाया और उसका पुत्र उशना कहलाया । उशना ने एक सौ अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न किये ।

तत्सुतो रुचकस्तस्य पञ्चासन्नात्मजाः शृणु ।
पुरुजिद्रुक्मरुक्मेषुपृथुज्यामघसंज्ञिताः ॥ ३४ ॥

शब्दार्थ

तत्-सुतः—उशना का पुत्र; रुचकः—रुचक; तस्य—उसके; पञ्च—पाँच; आसन्—थे; आत्मजाः—पुत्र; शृणु—सुनो (उनके नाम); पुरुजित्—पुरुजित; रुक्म—रुक्म; रुक्मेषु—रुक्मेषु; पृथु—पृथु; ज्यामघ—ज्यामघ; संज्ञिताः—नाम वाले ।

उशना का पुत्र रुचक था जिसके पाँच पुत्र थे—पुरुजित, रुक्म, रुक्मेषु, पृथु तथा ज्यामघ ।

कृपया मुझसे इनके विषय में सुनें ।

ज्यामघस्त्वप्रजोऽप्यन्यां भार्यां शैब्यापतिर्भयात् ।
नाविन्दच्छत्रुभवनाद्भोज्यां कन्यामहारषीत् ।
रथस्थां तां निरीक्ष्याह शैब्या पतिममर्षिता ॥ ३५ ॥
केयं कुहक मत्स्थानं रथमारोपितेति वै ।
स्नुषा तवेत्यभिहिते स्मयन्ती पतिमब्रवीत् ॥ ३६ ॥

शब्दार्थ

ज्यामघः—ज्यामघ; तु—निस्सन्देह; अप्रजः अपि—यद्यपि निःसन्तान; अन्याम्—दूसरी; भार्याम्—पत्नी; शैब्या-पतिः—शैब्या का पति होने के कारण; भयात्—भय से; न अविन्दत्—स्वीकार नहीं किया; शत्रु-भवनात्—शत्रु के खेमे से; भोज्याम्—वेश्या को; कन्याम्—कन्या; अहारषीत्—ले आया; रथ-स्थाम्—रथ में बैठी; ताम्—उसको; निरीक्ष्य—देखकर; आह—कहा; शैब्या—ज्यामघ

की पत्नी शैब्या ने; पतिम्—पति पर; अमर्षिता—अत्यन्त क्रुद्ध; का इयम्—यह कौन है; कुहक—अरे धूर्त; मत्-स्थानम्—मेरा स्थान; रथम्—रथ पर; आरोपिता—बैठने के लिए अनुमति प्राप्त; इति—इस प्रकार; वै—निस्सन्देह; स्नुषा—बहू; तव—तुम्हारी; इति—इस प्रकार; अभिहिते—सूचित किये जाने पर; स्मयन्ती—हँसती हुई; पतिम्—पति से; अब्रवीत्—बोली।

ज्यामघ के कोई पुत्र न था, किन्तु क्योंकि वह अपनी पत्नी शैब्या से डरता था अतएव उसने दूसरा विवाह नहीं किया। एक बार ज्यामघ किसी शत्रु राजा के खेमे से एक लड़की ले आया जो एक वेश्या थी। किन्तु उसे देखकर शैब्या अत्यन्त क्रुद्ध हुई और उसने अपने पति से कहा “क्यों रे धूर्त! यह लड़की कौन है जो रथ में मेरे आसन पर बैठी है?” तब ज्यामघ ने उत्तर दिया “यह लड़की तुम्हारी बहू (पुत्रवधू) होगी।” इन विनोदपूर्ण शब्दों को सुनकर शैब्या ने हँसते हुए उत्तर दिया।

अहं बन्ध्यासपत्नी च स्नुषा मे युज्यते कथम् ।
जनयिष्यसि यं राज्ञि तस्येयमुपयुज्यते ॥ ३७ ॥

शब्दार्थ

अहम्—मैं; बन्ध्या—बाँझ; अस-पत्नी—सौत रहित; च—भी; स्नुषा—बहू; मे—मेरी; युज्यते—हो सकती है; कथम्—किस तरह; जनयिष्यसि—तुम जन्म दोगी; यम्—जो पुत्र; राज्ञि—हे रानी; तस्य—उसके; इयम्—यह लड़की; उपयुज्यते—उपयुक्त होगी।

शैब्या ने कहा, “मैं बाँझ हूँ और मेरी कोई सौत भी नहीं है। भला यह लड़की मेरी बहू (पुत्रवधू) कैसे बन सकती है?” ज्यामघ ने उत्तर दिया, “मेरी रानी! मैं देखूँगा कि तुम्हारे सचमुच पुत्र होगा और यह लड़की तुम्हारी बहू बनेगी।”

अन्वमोदन्त तद्विश्वेदेवाः पितर एव च ।
शैब्या गर्भमधात्काले कुमारं सुषुवे शुभम् ।
स विदर्भ इति प्रोक्त उपयेमे स्नुषां सतीम् ॥ ३८ ॥

शब्दार्थ

अन्वमोदन्त—स्वीकार कर लिया; तत्—यह भविष्यवाणी कि उसके पुत्र होगा; विश्वेदेवाः—विश्वेदेव देवतागण; पितरः—पितृगण; एव—निस्सन्देह; च—भी; शैब्या—शैब्या ने; गर्भम्—गर्भ; अधात्—धारण किया; काले—समय आने पर; कुमारम्—पुत्र को; सुषुवे—जन्म दिया; शुभम्—अत्यन्त शुभ; सः—वह पुत्र; विदर्भः—विदर्भ; इति—इस प्रकार; प्रोक्तः—विख्यात हुआ; उपयेमे—बाद में विवाह कर लिया; स्नुषाम्—बहू रूप में स्वीकृत; सतीम्—सती साध्वी लड़की को।

बहुत काल पूर्व ज्यामघ ने देवताओं तथा पितरों की पूजा करके उन्हें प्रसन्न कर लिया था। अब उन्हीं की दया से ज्यामघ के शब्द सही उतरे। यद्यपि शैब्या बाँझ थी लेकिन देवताओं की कृपा से वह गर्भिणी हुई और समय आने पर उसने विदर्भ नामक शिशु को जन्म दिया। चूँकि शिशु के जन्म के पूर्व ही उस लड़की को बहू रूप में स्वीकार किया जा चुका था अतएव जब विदर्भ सयाना हुआ तो

उसने उसके साथ विवाह कर लिया ।

इस प्रकार *श्रीमद्भागवत* के नवम स्कन्ध के अन्तर्गत “ययाति के पुत्रों की वंशावली” नामक तेईसवें अध्याय के भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुए ।